सृष्टिधरेक गीत

प्रकाशक
कुरमाली भाषा परिषद्
राँची

BVP- 2642
31/1/19

6/10

सृष्टिधरेक गीत

सम्पादक
डॉ. एच. एन. सिंह
पूर्व प्राध्यापक (कुरमाली)
स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

प्रकाशक
कुरमाली भाषा परिषद्
राँची

प्रथम संस्करण – 2008
प्रतियाँ – 1000
मूल्य – 30/– रु0

प्रकाशक : *कुरमाली भाषा परिषद्, राँची*
के0 के0 कॉलोनी, लोअर बर्दवान कम्पाउण्ड
लालपुर, राँची – 834001

मुद्रक : *नॉवल्टी आर्ट प्रेस,*
मेन रोड, राँची – 834001
दूरभाष : 2331631

टुइ टुम

कुरमाली भाषा मूल रूप माहान तीन राइज माहान पसरल आहेइक– झारखण्ड, पं बंगाल आर उडीसा। मनतुक इ भाषाकर पढ़ाइ एखन मेट्रिक के एम.ए. तड़िक झारखण्ड माहानेइ हेहेइक। तबे पाठ्य पुस्तककर बेजाइं टान आहेक। दरकार आहेक भिनु–भिनु बिधामाहान लिखेक आर छापावेक। कुरमाली भाषा परिषद्, राँचीइं 1975 ई लेइ छापावेक कसनि करते आहे आर परिषद् बाटेले कइ एकटा पथि छापावल गेलाहेइक। एहे लाघाइरे कुरमालीक संत कवि सृष्टिधर सिंह कोटियार कर गीत के किताबी रूप देवाल गेलेइक जेटा सिलबसे आहेइक। परिषद् कर आगुबाटे कुरमालीक लोकगीत, मध्यकालीन जनकविक गीत आर आधुनिक कविकर गीत/कविताक संग्रह छापावेक विचार आहेइक। एहे नियार कुरमालीक लोककथा, मुहावरे, लोकोक्तियां आर पहेलियां करऽ छापावेक दरकार आहेइक। परिषद् बाटे ले लिखेइयाराके नेहर कराल जाहेइक जे बेस/उच्च स्तरीय किताब हेइक ताहेले परिषद् बाटे ले जूनजूना छापावेक चेसटा कराल जातेइक।

राँची, 3 जून 2008

(राजाराम महतो)
अध्यक्ष
कुरमाली भाषा परिषद्
''झारखण्ड प्रदेश''
राँची– 834001

के0 के0 कॉलोनी
एल0बी0सी0
लालपुर, राँची
मो0 : 9431166251

कि सृष्टिधर के शिष्यों की कुछ प्रकाशित पुस्तकें भी हैं। परन्तु, अथक प्रयास के बावजूद मुझे ऐसी एक भी पुस्तक हाथ नहीं लगी। प्रस्तुत संकलन में जिन गीतों को समाविष्ट किया गया है, उनके रचना वैशिष्टय् को ध्यान में रखकर कम से कम चार कोटियों में रखा जा सकता है—

1. कृष्ण—प्रसंग गीत 2. अध्यात्म—गीत

3. बोध—गीत 4. कृषि—गीत

प्रस्तुत गीत संकलन में मुझे जिन व्यक्तियों से महत्वपूर्ण सहायता मिली है, उनके नाम है—स्व0 महिम महतो (जोबला), सर्वश्री रामसाय महतो, स्व0 मनसुख महतो, स्व0 श्रीकान्त महतो, मानसिंह महतो, स्व0 भुनेश्वर महतो, सीदाम महतो (बारूडीह), नरसिंह महतो (डोमन डीह), नरहरि सिंह देव कटियार (हेंठ जारगो), माधव महतो, कृष्ण मोहन महतो एवं अध्यक्ष महतो (विचाहातु, बुण्डू)। मैं इनका चिर ऋणी हूँ। धन्यवाद के अलावे मैं इन्हें कुछ दे नहीं सकता। कवि सृष्टिधर के जीवन—वृतान्त का अल्पांश मुझे श्री धरम महतो से मिला। मैं उनका हार्दिक आभार स्वीकार करता हूँ। लोक—साहित्य के मर्मज्ञ एवं भाषाविद् स्व0 डा0 धीरेन्द्र नाथ साहा, पीएच0 डी0, डि0 लिट्0, जिन्होंने मेरे साहित्यिक जीवन को एक नई दिशा, दी, लोक—साहित्य के प्रति रूझान पैदा किया, के प्रति मेरी तभी सच्ची श्रद्धांजलि होगी, अगर मैं कुरमाली साहित्य के लिए कुछ भी कर सका। विधिवेत्ता स्व0 विष्णुचरण महतो की छत्रछाया में रहकर मेरा साहित्यिक जीवन पल्लवित हुआ, उनके प्रति आभार व्यक्त करना मात्र औपचारिकता ही होगी। और अंत में, इस पुस्तक की श्रीवृद्धि के लिए कुरमाली भाषा प्रेमियों, अध्येताओं एवं अनुसंधानकर्ताओं के हर सुझाव का सादर स्वागत होगा।

ता: 15 जनवरी, 1982 **(एच0 एन0 सिंह)**

संत कवि सृष्टिधर

कुरमाली के महाकवि संत सृष्टिधर का जन्म बंगला सम्वत् 1305 (पौष मास दिन रविवार) तदनुसार 1898 ई0 को पुरूलिया जिलान्तर्गत झालदा थाने के **'हेंठ जारगो'** नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम नन्दू राम सिंह देव कटियार तथा माता का नाम रूपन बाला देवी था। इनके पिता एक साधारण कृषक थे।

सृष्टिधर का विवाह 9 वर्ष की उम्र में राँची जिले के बुण्डू थानान्तर्गत लोवाडीह ग्राम में हुआ। इनकी धर्म पत्नी का नाम गुसाली बाला देवी है। जब ये सोलह वर्ष के लिए तो पिता का साया उनके ऊपर से उठ गया। पिता की मृत्यु के पश्चात् घर की सारी जिम्मेवारी इनके कंधे पर आयी। सम्वत् 1336 सल (1929 ई0) के लगभग इनकी भेंट स्वामी अटल बिहारी ठाकुर जो वैष्णव धर्म के बाउल पंथी थे। सृष्टिधर वैष्णव धर्म में दीक्षित होने के पश्चात् उसके प्रचार–प्रसार में लग गये।

वैष्णव मतावलम्बी होने के कारण इन्हें वैष्णव सभाओं, संगठनों एवं अनुष्ठानों में भाग लेने के लिए अक्सर आमंत्रण मिलता था। वैष्णव धर्म के बाउल सम्प्रदाय के प्रवर्तक जयदेव गोस्वामी की जन्मभूमि **"सिउड़ी"** में प्रत्येक पौष संक्राति को वैष्णवों का तीन दिनों तक विराट् सम्मेलन होता था। स्वामी अटल बिहारी ठाकुर के एक अन्य शिष्य मनोहर खेपा सृष्टिधर को नियमित रूप से वहाँ आने का निमंत्रण दिया करते थे। मनोहर खेपा अत्यंत ही प्रतिभावान साधक थे। कहा जाता है कि इनके आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं दैहिक संबंधी जटिल प्रश्नों के उत्तर सृष्टिधर स्वरचित गीतों के माध्यम से ही देते थे। इनके नवरचित गीतों को सुनकर मनोहर खेपा भावविभोर हो जाते थे। अपने अध्यात्म संबंधी गीतों से सृष्टिधर अन्य भारतीय साधकों की भांति अपने गुरू एवं अन्य भक्तजनों (साधकों) का सदा मनोरंजन किया करते थे। आशु गीत रचना और प्रत्युत्पन्नमतित्व उनका वैशिष्ट्य था।

अनुक्रम

गोपी - उपालम्भ

लमपटऽ सठऽ छँड़ा,
थानाइं राखे टेढ़ा–टेढ़ा।
एसन माहान केसे जाम पानी,
किना कहि देबों नन्दरानी।

जदि देखेइ पखेइर घाटे,
जाइके धरेइ साड़िक टेंपे।
दुइयो हाँथे करे टानाटानी,
किना कहि देबों नन्दरानी।

टमड़ी देखेइ गटा गात,
हाँसि–हाँसि कहेइ बात।
कतेक रकम कहेइ मनदऽ बानि,
किना कहि देबों नन्दरानी।

एकर काथा लागे लाज,
एसन छवाक मुँहे आइग।
सृष्टिधर कहे समुझानी,
किना कहि देबों नन्दरानी।

जशोदा-वचन

ओ रे, सनाक जादु, सुने बाछा धन
गोपी सँगे काहे तर एसन
काहे भाँगि देलसिन बरतन।
गाते रहेन लील साड़ी
सेहऽ देले आसिन फाड़ी
तर नामें लालिस घने–घने।

एरा हेकत कुलेक जेनि
दुइओ बेला जात पानि
काहे कहलेसिन कुबचन
तर नामें लालिस घने–घने।
सृष्टिधरे कहेइ उचित
तर गाते किना नेखऊ पित
तर दाए मर मरन
काहे भाँगि देलसिन बरतन।

कृष्ण - उक्ति

मोयं रहँ गरूठीन, घुराइ देलेन कतखिन।
मिछाइ एरा करऽहत लहर
माइ गो, काहे कहिस भूखेक पहर।
        हाँड़ीगिला लेत गुड़काइ
        गरू गिला देत भिड़काइ
        गरूइ हाँड़ी भाँगी देलथिन अखर।
        माइ गो मिछाइ एरा करऽहत लहर।
मुड़े लेत पचल बिंड़ी
आरऽ लेगत बुचा हाँड़ी।
चली जात छाड़ी के डहर
माइ गो मिछा एरा करऽहत लहर।
        कहे सृष्टिधर दीन
        एसन हेकत सभे दिन
        देखाइ दिहन जाइकर डहर
        माई गो मिछा एरा करऽहत लहर।

जशोदा - उक्ति

बड़ऽ घारेक बहु बेटी
लाज नेखेन एकऽ ठपि।
दोस देखाइ दिहा पर छवाटा
टाटका मिछा तहर काथा टा।
        पर छवा के गाइर देइके
        दउड़ि आइहा लालिस लेइके।
        दोस देखाइ दिहा मर छवाटा
        टाटका मिछा तरह काथाटा।
भाइगे नेखे हामर घारेक बुढ़हाटा
एबार जदि आइहा घुरि।
कहि देबेन ब्रजपुरी
भारि बदमास हेकत जेनिक जाइतटा।
        सृष्टिधरे कहेइ भाभी गुनि
        बेजाइ रागे हेलि नन्द–रानी।
        छाड़ि–छुड़ि गेली भितर घारटा
        टाटका मिछा तर काथाटा।

कृष्ण - उक्ति

मके करत भेलका--भेलकि
मोंय देलेइ रागे ठेलकि।
एक टी गोपिन गिरलि जमुनाइ
गोपी राकर दोसेक सीमा नाइ।

तोयं तऽ मके देखले दसी
मर ते गोपिरा दुइ गुन बेसी।
मोयं जेतके कहों माइ
गोपीरा कर दोसेक सीमा नाइ।

मोयं हेकों अलपऽ दसी
गोपिनरा मर ले दुइ गुना बेसी
ताकर काथा धरा त अननाइ
गोपीराकर दोसेक सीमा नाइ।

ललिता दउड़ि जाइके
डाकि आनलेइक बलाय के
कतेक रकम गाइर देला
सुनेक कर कान नाइ
गोपीराकर दोसेक सीमा नाइ।

कहे दीन सृष्टिधर
विचारे मर नेखी डर
गाइर दिस ना इ सबकर काथाइ।

जशोदा - उक्ति

सुना तबे गोपी हामर वचन
एबार जदि करे गो एसन।
धरि लेले आनिहाक गो तखन
लेले आनिहा हाँड़ी--खाँड़ा देखबेंइ केसन।

देखबेंइ केसन केरिया छड़ायँ।
कन काथाटा कहताक तखन।
साँचा हेले, देबेइं गो गरदन।
कहे दीन सृष्टिधर, तहर किछु निही डर
आइहा उचित साजा, देबेइं गो तखन।

गोपी - उक्ति

तोयं विचार करबे भाला
तबे जाती हामर जाला।
　　　　ए नन्दरानी आवलियो मने–मने
　　　　गुनी गे नन्दरानी।
एहे बिचार आवलऽ मने
गाइर देबियो गड़े–सड़े।
　　　　ए नन्दरानी तरा हामरा
　　　　सभे हेकियो जेनी।
जेनिक निन्दा करेइ जेनी
से केसे हेली राजरानी।
　　　　ए नन्द–रानी,
　　　　सृष्टिधर सभे लेलाक जानी
　　　　ए नन्द–रानी, आवलियो मने गुनी।

गोपी - उक्ति

ननदऽ गवालाक बेटा,
बड़ि रे लिलज सेटा।
　　　　तरू मूले केऊ जाइहाना,
　　　　देखा गो, कुले जेसन दाग लिहा ना।
सेतऽ हेके राजाक बेटा,
कने कहेइ अकर काथा।
　　　　काथा कहले लागे जरिबाना,
　　　　देखा गो, कुले जेसन दाग लिहा ना।
गाछे बसि बाजाइ बाँसी,
से टी बाजे दिबा–निसी।
　　　　बाँसि सुनि केऊ भूला ना,
　　　　देखा गो, कुले जेसन दाग लिहा ना।
सृष्टिधर कहत बानी,
दसर घाट ले लेगा पानी।
　　　　पानी आनले लागे जरिबाना।
　　　　देखा गो, कुले जेसन दाग लिहा ना।

बंसी - वर्णनमाला

एक दिन कृष्ण ठाकुर,
निंदे भेला आतुर।
का कहब रे सखी,
छाड़ि राखल बाँसिया।

बिछना उठाइते,
जुटिला आवडलि प्राते।
का कहब रे सखी,
जटिलता देखल ताहाँ बाँसिया।

बाँसिया धरऽलि हाथे,
राग भरल गटा गाते।
का कहब रे सखी,
कहलऽ देखब केसन कालिया।

लमपटऽ सठऽ टुरा,
परेक धारे करेइ डेरा।
का कहबँ रे सखी,
सृष्टिधर लेल कुल जातिया।

बृन्दा - उक्ति

लमपटऽ नागर,
मने भारी डर,
आजु काहे तँहे कातर।
श्याम नटऽबर,
कहू तँहे दुखे के अर।

नयान भंगिमा,
बयान लालिमा,
आजु काहे गुचल तर।
श्याम नटऽबर,
कहू तँहे दुखे के अर।

मोंय तहर दासि,
किना कहम बेसि
कन कामना करे सृष्टिधर।
श्यामऽ नटऽबर,
कहू तँहे दुखे के अर।

कृष्ण - उक्ति

सुने बृन्दा भारि निन्दा,
कपाले पर भेलि।
श्रीमती बिछउना परे,
बाँसी छाड़ऽलि।
एहे जे ब्रजपुरे,
अपजस घटऽलि मरे।
इजर गाते रे
बृन्दा पर भेला कालि।
जतेक मनेक दुख
तके जानाऽवलि।
तोयं बृन्दा मके
अघटन घटाउऽलि।
पिरीती लेठाक लेठा,
हामे नाहि जानऽलि।
सृष्टिधरे एबे अगाधे भाँसाऽलि।

ललिता - उक्ति

राधाकर नेहर काथा,
सुनि कहे ललिता
राधे काहे धनि एतेक करबे।
तर खातिर देबेइक जीव
तोयं जे हामर चुकाक घीव
राधा हामरा धनि ढाँपनी तरजे।
तोयं चाँद हामरा राइत
जेसन मणि बिनु मरत साँप
राधे, पानी सुखले मछरी जेसन।
कहे दीन सृष्टिधर,
केसे के कहिस पर
राधे धरि आनि देबियो नटबर जे।

बृन्दा - उक्ति

मेहरारू कर मयसेवा,
चलि जाबइ अकर डेरा।

धिरिजा धरहूँ पराने,
बासिया आनबों निजेक गुन।

सयन स्तमन धारक,
कन कामे भोयं अपारक।

धिरिजा धरहूं पराने,
निश्चिन्त मने रहब वृन्दावने।

बांसि आना कनऽ छार,
आन का कहबऽ आर।

धिरिजा धरहूं पराने,
मिलन कराउअब राधा सने।

कहे दीन सृष्टिधर,
बुद्धि बल नटबर।

धिरिजा धरहूं पराने,
एहे कहि डाकल गोपीगने।

गोपी - उक्ति

ललिता चम्पकऽ लता,
इन्दु , रेखा आर सुचित्रा।
दउड़ि आवल बृन्दा पासे,
गो, मन हुतासे,
बृन्दा के सबहिं जिज्ञासे।

कहें अ गो, परानऽ सखि,
काहां से कमल आंखि
देखाब सेइ पितऽ बासे,
गो, मन हुतासे।

काहे बदन तर,
देखहूं डर–डर।
चांड़ करि कहे हामर पासे,
गो, मन हुतासे।

कहे सृष्टिधर,
तहर निहि डर।
बांसिया छाड़ल जटिला आबासे,
गो, मन हुतासे।

गोपी - उक्ति

गोपी सभ धार जाइ
निज–निज हाँड़ि लेइ
गो मरी हाय–हाय!

बहिर हेला ब्रजंगना
पाँती–पाँती रूप नाहि तुलना।

आगुइ चले राय किशोरी,
मांझे बिन्दा सहचरी
गो मरी हाय–हाय!

पाछुइ बलाय जिनि के खंजना
रूप हेरि गो हियाइ जागे मदना।

ललिता संगे बिसखा,
इन्दु , रेखा आर चित्रलेखा
गो मरी हाय–हाय!

सृष्टिधर कहे पहुँचल जमुना
कदम तरे गो देखा काला सोना।

कृष्ण - उक्ति

का कहब रे सखा
जमुना डहरे देखा
हामे एका, से धनी एका
सखा रे, हेरि मन गेली मुरझाइ।

आड़ नयने देखी
मुचकी–मुचकी हाँसी
चलि गेला अंग मचकाइ
सखा रे हेरि मन उठे कलकाइ।

एसन चलनेक राग,
जेसन पँवारेक आइग।
मर मन देला पड़ाइ
सखा रे, सेखन हामर जिवे ना सहाइ।

मर मन लेइ गेल,
धुरी नाहीं देखा देल
सृष्टिधर एखन पसताइ
मानुस जनम बहि जाइ।

बृन्दा - उक्ति

बृन्दा कहऽए बात,
चाला सखि मर साथ।

बांसिया धरहू हाथे,
मान राखहूं बरजऽ नाथे।

चाला सभे सारी–सारी,
आर ना करिहा देरी।

बांसिया धरहूं हाथे,
जाए कहब अकर साथे।

कहब से नले–कले,
जेटा नहि कनऽ काले।

बांसिया धरहूं हाथे,
ताके बुझाअब नाना मते।

सृष्टिधरे संगे करि,
गोपी सब त्वरा करि।

बांसिया धरहूं हाथे,
गोपिनी चलऽला बरजऽ पथे।

गोपी - उक्ति

हाथे–हाथे धरि बांसि,
गोपी सब हांसि–हांसि।

गोपिनी आनन्दऽभरे,
पहंचल जटिला दुआरे।

डाकल से जर करि,
जटिला आवलऽ फिरि।

गोपिनी आनन्दऽ भरे,
बेरि–बेरि डाके उच्च सरे।

बांसि सब भुंए राखि,
गोपी सब देखा–देखि।

गोपिनी आनन्दऽ भरे,
जटिला के जाएं गड़े धरे।

कहे दीन सृष्टिधर,
आजु गाँव–आवे हामर।

गोपिनी आनन्दऽ भरे,
बांसि बिसरलऽ राति भरे।

ललिता - उक्ति

सभे संगिनी मिली,
राधा के उठावली
कृष्ण–मंत्र काने फूंके,
रिचिक उठे न राधे।
हामरा गिरलियो मन दुखे।

आवलियो भारी माठे,
डर नाइ अपबादे
देखबधु चारी आँइखे
हामरा गिरलियो मन दुखे।

नाना बिनती करी,
कहे सभे सहचरी
ललिताइ कृष्ण के डाके
हामरा गिरलियो मन दुखे।

कृष्ण के धीरे–धीरे,
धरल सृष्टिधर
लेगी मिलावत हाथे–हाथे
हामरा गिरलियो मन दुखे।

कृष्ण - उक्ति

लालिस करले मायेक पासे
सुनि के सभे लक हाँसे।

पानी आने अबऽसेंसे अचेतन
राय करि लेगबे आसामी धराय।

एतेक लंघना तर
सुनि के लाज लागे डर।

तहर चिते नाइ डर
करले कबे जे ढिठाय।

तर कि एसन भालऽ काज
प्रेमेक ऊपर दागाबाज।

घारे रहले नन्द राज
चालाकी देतोव फाटाय।

कहे दीन सृष्टिधर
तहर किछु निही डर।

तोयं चोर, मोयं चोर, देलसिन जानाय
कबे लेगबे घनी आसामी धराय।

जटिला - उक्ति

सुनऽ गो जतऽ गोपिनी,
आजु बिगत जामिनी।

बांसिया पावऽलि धनि,
अचरज मोयं देखि–सुनि।

अकर मुड़े बांधलऽ
सात छिड़े झलऽमलऽ।

बांसिया पावऽलि धनि,
बिना फूंके राधा–राधा ध्वनि।

बांसिटी धरले हाथे,
रिझऽ लागे गटा गाते।

बांसिया पावऽलि धनि,
कृष्ण के बांसिया सुनि।

कई गो बांसी तरह,
कहे दीन सृष्टिधर।

बांसिया पावऽलि धनि,
बृदा सखि देखावल आनि।

बृन्दा-उक्ति और श्याम को बंशी अर्पण

कोई गो जटिला मांसि,
पावऽले केसन बांसि।

एक बार देखाइ देनऽ मके,
पेछु नाहेइ घुराइ देबों तके।

बृन्दा कहइते बानि,
जटिला देवल आनि।

एक बार देखाइ देनऽ मके,
बृन्दाइ देलेइक नलिता के।

एकर हाथ ले अकर हाथ,
पाए गेला बरजऽ नाथ।

एक बार देखाइ देनऽ मके,
बृन्दा भुलावल जटिला के।

कहे दीन सृष्टिधर,
सुखी भेला नटऽवर।

एक बार देखाइ देनऽ मके,
आदरे राखल बांसिया के।

गोपी - उक्ति

गोपी डहरला घार,
मने करि एहे विचार,
घुरी नाहीं आवल आर,
सखी गो, जा हेइक हेति एबार।

नन्द रानी जानली एबार
डर ना रहलऽ एबार
अकर छवाक महिमा अपार
सखी गो! गटाइ दखल हेली एबार।

चाला समेकाइ जबुना,
काकरऽ काथा मानिहा ना
कृष्णइ जीबेकर आधार
सखी गो, ऊहेले दुनिया आँधार।

कहे दीन सृष्टिधर,
सदाइ गुरूजनाक डर,
सखी गो, जाइ भेंटब से नागर।

राधा - उक्ति

सुना–सुना काल बरन
पड़ल घावे ना दिहा लबन।

सुनी इ चिते जलन
पूर्व दुख करि के शरण।

सुना–सुना सोना जादु धन
आवला जिउ ना दिहा बेदन।

हामरा आवलियो मन सुखे
तोयं गिरले मन दुखे।

बिसास देखी परके एसन
मने–मने करिस शरण।

ए सभ काथा छाड़ी देहाक
दासी आपन करि लेहाक।

जेसन घुरा खेला घुराआय
गढ़ि के मांगत घने–घने।

सुना–सुना बनवारी
आर ना करिहा देरी
कहँ तर गड़ धरी।

सृष्टिधरेक एहे निवेदन
सुना–सुना सोना जादु धन।

राधा कृष्ण मिलन

राधा–कृष्ण मिलन देखी
पलके ना पड़े आँखी
ढली, गेला अचेतन गोपी
भूएँ गिरी गेला,
राधा–कृष्ण बाँधाइ हेला।

केरिया मेघे बिजली
चमके जेसन लागली
सभे गड़े भुजे गेला
राधा–कृष्ण बांधाइ हेला।

आधा चुड़ा, आधा बेनी
आधा–आधी परिधना
ढली गेला ठकरे
पावल जेसन मेघ माला।

सौरभे अली धावल
गोपी रिझे–सभे बेयाकुलऽ
मन साधे दीन सृष्टिधर
मांगे गोपी धुरा गड़।

गोपी - उक्ति

मोहन भगनिया, मोहनेक लागिया
सारा दिन हामे रहली बसिया।
सामके खावावा बलि।

आसा पथ हेरिया
ना आवल रे से निठुर कालिया।

बिरह बिरहिनिक दिल गेलेइक टुटिया
मन देखऽ रहे भाभिया–भाभिया।

साम लागि हामें, रहली जागिया
सृष्टिधरेक मन आलऽ गेलीरे निझिया।

प्रेम - प्रसंग

स्याम हेरी राय किशोरी
आकुल जीवनवा
पानी भरइते थिर नाहिं मनवा।
काँखे गागरी, चलत जतन करि
नाम भांसल भरे, जैबुन जीवनवा।
भरे उलटा भांड़ा,
श्रीमतीकर नाहुँ साड़ा
अचेतन धनी हेली मनवाँ।
चारी पासे लेला घेरी
सखी सब सहचरी
सृष्टिधरेक सेहो चरनवाँ।

गोपी - उक्ति

मोहन भगनिया, मोहनेक लागिया
सारा दिन हामें रहली बसिया।
साम के खावावा बलि,
आसा–पथ हेरिया
ना आवल रे से निठुर कालिया।
विरह–विरहिनिक दिल गेला टुटिया
मन देख रहे भाभिया–भाभिया।
साम लागी हामें, रहली जागिया
सृष्टिधरेक मन आलऽ
गेली रे निझिया

प्रेम-प्रसंग गीत

प्रेम करले मर संगे,
राखले कतेक रीझे रंगे
तोयं तखन करले आदर
एखन काहे बासले पर।

तोर छाड़ा मर केऊ नाइ
कहे हेलिस सर्वदाइ
सेऊ काथाटा हेलोऊ तर सर
एखन काहे बासले पर।

तोयं भूली देले मके
मोयं रहम किना लेखे
करले मके डाइर छाड़ा बांदर
एखन काहे बासले पर।

मके एसन दुख देले
जनमे जनम कांदावले
सृष्टिधरे एकदम जर–जर
एखन काहे बासले पर।

उड़ीस

जगत के खालेइक रे भाई एके उड़ीसे,
हामरा मरलिय मनेक आलिसे,
जगत के खालेइक रे भाई एके उड़ीसे।

उड़ीसेकर एसन टेढ़ी,
ब्रहमाक देलेइक पेट फाड़ी,
बरहमा पाराह गेल, नि रहल देसे।

उड़ीसेक नेखेइक दांत,
चाबबे करेन दिन राइत,
जखेक रकम लागल रकत चुसे।

ताकर डरे नारद ऋषि,
तप करल बसी,
बिपदे गिरल शील–निधि कर देसे।

शिव हेला मसान बासी,
डरे पाराइ गेल कांसी,
काकी केउ नि रहल अबऽसेसे।

बरमान्ड हेलेइक उड़ीसे खय,
सृष्टिधरेक बेड़े भय,
चलला नि केउ उपदेसे।

जागरण

काकर काथाइ भुलिहा ना एखन,
सुना आदिवासी हरिजन।
आर सब कुरमी जाइत,
करिहा ना बदजाइत।
आपन चारखाइ तेल देहाक एखन,
सुना आदिवासी हरिजन।
हामरा सुधाइ जतब हार,
आरऽ सब हेता मिनिसटार।
एक लकेक हाथे सभे देसेक धन,
सुना आदिवासी हरिजन।
हामर छआ सब चौकीदार,
केउ नि हेता ताकर पार।
केबल हामर देसेक धरन,
सुना आदिवासी हरिजन।
देखा भाइ कोयरी कुम्हार,
सभेकाइ हे हुसियार।
ना हेले निकटे मरन,
सुना आदिवासी हरिजन।
जारा करला बेलेक मारकिट,
तारा करला रेडियो फिट।
ताकर हेलेन आनन्दऽ भवन,
सुना आदिवासी हरिजन।
आउलेइक एमेलेक भट,
मारिस ना निजेइ चट।
हेराइहाना हेलाइ निजेक रतन,
सुना आदिवासी हरिजन।
सृष्टिधरेक आइंआ हक,
खाएक बेराइ कतेक लक।
सुधाइ फांका–फांकी निमनतन,
काकरऽ काथाइ भूलिहाना एखन,
सुना आदिवासी हरिजन।

प्रौढ़ शिक्षा

मुरखता गुचावा भाइ राइत इस्कूले,
छवापुता रहता सभ कुशले।

लिखा—पढ़ा मानुसेक जीवन,
एहेटाइ त सबले बड़ऽधन,
लेइ नि पारथिन भइयादे भाग खोजले।

लिखा पढ़ाइ हेइक गेआन,
आरऽ आहेइक इजत—मान,
नि सिखले त मानुस काहे हेले।

लिखा—पढ़ा सिखला जारा,
तोरे हेंठे रहत जारा,
फरफरि पाइराइ जात साइकिले।

जीव टा करोउ धक—धक,
तरऽ त भाइ आहेइक हक,
सृष्टिधर कहलउ ना सिखले।

मुरखता गुचावा भाइ राइत इस्कूले,
छवा—पुता सभ रहता कुसले।

कारखाना

भारते आहेइक कतेक कारखाना,
सेटा भाइ आगुइ जाना।

खालीरीइं करलाक सिरमिट फेकटरी,
टाटाइ हेहेइक लोहा तेयारी।

अलमुनियम जिन्दा मुरी,
एहे पासेइ देख ना,
भारते आहेइक कतेक कारखाना।

हटिया आर दुरगापुर,
राउरकेला और बर्नपुर
आरऽ हेतेइक कतेक किना
सेऊ जाइहेइक खुना।

पास करले हेक निकले
काम पावे अब हेले
मूरख कर बलि बहाइ निसाना।

सृष्टिधरे कहऊ हित,
तोयं बुझिसना विपरीत,
निजके छवा केउ मुरुख राखिहान ना
भारते आहेइक कतेक कारखाना।

पंचेतबांध

बलिहारी जय जहरलाल,
बाँधे बाकी नि राखल नेदि–खाल।

मान्धाताक आमले जदि,
बाकि रहलेइक कोसी नेदि
सेउ बाँधि देलेइक, तोयं देखबे चाल।

करला दामुदर भेली,
हाजार–हाजार आवला कुली,
कखनऽ जेसन आवत बंगपाल।

आरऽ देखे पंचेत डेमे
सेटा हेलेइक मानझूमे
पानी जमा राखताक कतेक काल।

आरऽ देखा डेम भाखड़ा
सेटा हेलेइक मूल आखड़ा
भारतेक गुचाउलाक जंजाल।

मेघे ना बरसलऊ पानी,
सरकारे देतोउ आनी
एहेटाइ तऽ एकर खेयाल।

सृष्टिधरे कहेइ हित
तोयं बुझिसना विपरीत
हामर कांगरेस सरकार भारी दयाल।

सराज (स्वराज)

सराज–सराज कहलेइ कि सराज हेइक,
मुंहेक काथाइ हेइक नि सराज,
देखावे हेतन काम करि।

सराज कहि–कहि,
जाइहा बाजारे,
सराज रहिगेल पांदाड़ घारे,
सराज जे भाई फूलेक भीतर।

कापास गाछे घरेइक फर,
घारेक लुगा घारेक चाउर।

घारेक तेल आर घारेक दाइल,
सुखे रहता चिर काल।

सुख जे दिन सराज हेतेक घारे–घारे,
घारेक झागड़ा घारे मेटावले,
हिंसा बाद छाड़ि देले।

तबे सुख आपने आवतेक,
समभाव बेबऽहारे।

सृष्टि केबल मुखेक दड़ा,
तोहरा कामे लागि पड़ा।

तोयं छटऽ मोयं बड़ऽ,
छाड़ी देहाक एके बारे।

बेटाक बिहा

बाबुक बाप छवाटाके बिहा दियोक एबार,
काम करे निहि पारम आर।

आवल रहे बाबुक मामा
कहलाक बड़इ त हेलाक भेगिना
केनिआइ कर मोरे रहलि भार।

देइ खजऽहत साइकिल घड़ी,
आरऽ देता टाका कुड़ी,
खरचे कर नेखोन तहर भार।

मायेइ त सभ देती गहना।
तबे आरऽ केथिक भाभना।
ना हेले तोयं जिमा ले तोर घार।

तोयं त हेले बेड़े मरद,
आवलेइ करिस तरज–गरज
खाइ तुराइ चलले परेक घार।

आवला बाबुक काका काकी,
बड़का के आनाहाक डाकी।
सृष्टिधरेक चले चमत्कार।

मानभूम

मानभूम के करेहेथिक कंगाल हो,
हुसिआर कुरमी, कोइरी, कुम्हार,
भूमिज, खड़िया आर संथाल हो।
आरो जतेक हरिजन,
सुना देइके एक मन,
तराइ देसेक शुद्धजन,
गाँधीइं करले आहोन बाहाल हो।

बामहन, तामली, मयरा, बेनिया,
तरा काकरऽ काथा ना सुनिहा।
बांगाली, बिहारी जाइत भाइ,
परदेस विभागेक हाल हो।
पंजाबी आर मारवाड़ी,
देखा मने विचार करि,
तरा सभकाइ बिहारी,
हेकिहा चिरकाल हो।

मानभूमेक मुसलमान किमबा,
हिन्दू किरिसतान,
सभकाइ करा जोगदान,
ना हेबेहे बेहाल हो।
राम—कृष्ण तिरपुरारि,
आल्हा, इसु आदिकार,
ताराउ केउ निही तो बंगाली,
सासतरे परमान बिसुम हो।

बहुत कतेक आचार—विचार,
कागजे छापाउहत बार—बार,
ता हामरा के बेकार करता, कंगाल हो।
बंग करला पाकिस्तान,
बांगाले कर हेलेइक टान।
दाम रूपे राखे खोजत,
आवहमान काल हो।

पुरूष वाहेइक मेल खेसल, देखालाइ बेड़े धन,
एबार देश के तरा करिले सावधान हो।

मानभूम आहेइक बिहारे

मानभूम आहेइक बिहारे,
आर रहतेइक बिहारे हो,
जड़ऽ सड़ऽ रहब किना,
आर हामरा डरे हो।

हामरा आइहो एतेक लक,
काकर आहेक एसन हक।

हामरा के लेले जाताक जोरे हो,
जखन रहेइक बिरटिस राइज,
सेटा भाभि देखा आइज।

नाम राखलेइक छोटानागपुर हो,
मानभूम आहेइक बिहारे,
आर रहतेइक बिहारे हो।

मानभूमेक माटिक रंगे,
मेसेइक हामरा मेसब किना करे हो,
मानभूम आहेक बिहार,
आर रहतेइक बिहारे हो।

मानभूमेक गाछ—गाछड़ा,
आर जतेक गाढ़ा ढोढ़ा,
देखलेइ तऽ पारबे परिक करे हो,
मानभूम आहेक बिहारे,
आर रहतेइक बिहारे हो।

मानभूमे आहेइक लोहाधन,
ताँबा कोइला रतन,
से सभ हामर देखले आहात चोरे हो।

मानभूम आहेइक बिहारे,
आर रहतेइक बिहारे हो।

हामर आहि आँइआ हक,
खायेक बेराज कतेक लक।

हामर धन आहि माटि तरे हो,
मानभूम आहेइक बिहारे,
आर रहतेइक बिहारे हो।

हामर देसेक धन खायके,
चलऽहत सउब मकमकाइ के,
आसाम पाठावहत हामरा के काम करे हो।

मानभूम आहेइक बिहारे,
आर रहतेइक बिहारे हो।

रामपद, आर, माधाईदास,
एरा किछु देलां आस,
हामराउ तो सिखले आइहो मरे हो।

मानभूम आहेइक बिहारे,
आर रहेतइक बिहारे हो।

भाइगे रहे देबेन माहतो,
मानभूम के करलेइक सानतो,
पारेइ रिचिक आधेक बुद्धि धरे हो।

मानभूमेक दहतरा,
सेटा देखले आहात ओरा,
हुसियार हुसियार कहे सृष्टिधरे हो।

बंगाल-बिहार विभाजन

तेरह सौ एकसठ टि साल,
हेलेइक बड़ऽ जंजाल।

दुःखऽ देला लोक सेबक दले,
कहत सभे चाला बांगाले।

मानूभूमे नेखेइक घार,
अराइ त हेकत बेकार।

अकर काथाइं जाइहाना केऊ भूले,
कहत सभे चाला बांगाले।

आइहा जतेक मानभूम बासी,
हामराउ त हेकिओ चासी।

बका पाइके आवहत कतेक छले,
कहत सभे चाला बांगाले।

सृष्टिधरे कहे हाय,
अखर काथा बुझा दाय।

देखिस दुः ख देबथु,
अलग पुइएक दले हो,
कहत सभे चाला बांगाले।

ग्लानि

बांगला सिखलियो हामरा दाए गिरि के
मानभूमेक हाल देखिके।

बांगला हाकिम, बांगला उकिल,
बांगला केरानि,
बांगला सिखलियो हामरा देखि--सुनि।

नि मामा के काना मामा,
कहथिन सभे के,
बांगला सिखलियो हामरा दाए गिरि के

बांगला इसकुल, बांगला कलेज,
बांगला दोकानी,
हामरा नि जानियो,
बांगलाइ करता टानाटानी।

बांगलाइ दाबाउलेइक,
हामर मातृभाषा के,
बांगला सिखलियो हामरा दाए गिरिके।

जदि बांगला सिखले हेतोउ बांगाली,
एंगरेजिइं नि हेलोउ एंगराजि।

जबरजस्ती करहत हामरा के,
बांगला सिखलियो हामरा दाये गिरि के।

बांगला भाखा हामर निही,
इटा सभेकाइ दियोक कहीं।

बाइसाक मासेक कमीशन के,
बांगला सिखलियो हामरा दाए गिरि के।

निजेक धन निजेक धारे,
राखें भाई हुशियारे।

दोस ना दिहाक सिसटिके,
बांगला सिखलियो हामरा दाए गिरि के।

बेपार

जाइ रही बाजारे
कही देला लाह पाइकारे।

बसल रहत हाटेक धारे,
लाहेक दाम दुइ टाका सेरे।

किछु आहात कुसुम गांठा,
थोड़ेक रहत जाती काटा।

ताकर दाम रहेइक दसरे,
लाहेक दाम दुइ टाका सेरे।

अनेक आहोन गड़ाबाड़ी,
झाँकी देइके देहाक घड़ी।

गाछ लागावा भीतरे,
लाहेक दाम दुइ टाका सेरे।

दीन--दीन सृष्टिधर,
गाछ लगावा घरे घार।

लाह बिहिन देतोऊ सरकारे,
लाहेक दाम दुइ टाका सेरे।

चास

चास हेकेइक जगतेक परान,
उत्तम खेती, मध्यम बान,
निरधिन चाकरी भीख निदान।

चइते मरिच, कोहड़ा, कारला,
चास करले जातऊ जाला।

खाबे सुखे, छाड़तऊ दुःखे,
कबउ नि तर हेतोऊ टान।

बरसाख--जेठे बुनिस धान,
आसाढ़े कापास पान।

सराबने रोपिस धान,
मने--मने करिस धेयान।

भादरे बेइगन, बिलाती,
तिल गूंजा आर कुड़थी।

हेले छिन बरसा, आसिने सरिसा,
चासा कर हेतेइक कल्यान।

कारति के आलू , मूला,
अगहने पेआज दाना।

पूस मासे बुनिस बूट,
आर सबाई पीटा धान।

माघ पिआजेक काज,
छाड़ि जातऊ रिनेक बाज।

फागुने आंखुक बिसुम जांक,
सृष्टिधरेक जातेइक सभे टान।

गहम बूटेक चास

चास करा ज, गहम, बूट,
तबे खाइक नि हेतेइक टूट।

माघ मासे हेतेइक पानी,
चासे नितर हेतेइक हानी।

बिहिन करा झाट झूट,
चास करा ज, गहम बूट।

नकरी आसा मिछा भाइ,
टाँका कने रांधि खाइ

अन्य आसा सभे किछु झूठ,
चास करा ज, गहम बूट।

टाकाइ चाउर एक पइला,
सबेकाइ चारका ईंड़रावाला।

दुइ पारानी झागड़ा झाटा—झूट,
चास करा ज, गहम, बूट।

एक दल लक खाटेइया
आर एक दल लुटेइया।

ताराइ देला लागावल लूटा
चास करा ज गहम बूट।

सृष्टिधरेक लागलेइक धांधा,
केसे चलतेइक खावा—पिंधा।

भाभी—भाभी दिना भेला भुट,
चास करा ज, गहम, बूट।

भेजाल

भेजाल, जिनिस खायेक भालो नि,
आसले संग त मिलेइक नि।

जनहाइर, महुआ चुनी,
मइदा मेसाइ देथिक आनी,
पोटला करि राखत जतेक दोकानी।

जदि बाजारे किनला तेल,
तबे त एक बारेइ भेल,
तेइं त भाई रोगेक एतेक आमदामी।

हार जतत बाप दादा,
ताकर जिनिस गादा–गादा,
खाँटी माल पचावत जानी–जानी।

गूंजा सेइरसा करे चास,
खाबे–माखबे बारह मास,
सृष्टिधरे कहे भाइ जोड़ी पाणि।

राइत-पाहरा

चाला काइलेइ राइत पाहरा जाइयो
गाँविक धन हामराइ त खाइ हो।

गाँविक धन गेले चोरी
हामराइ त जाब मरी।

निही तखन टाका देलोव पाइयो।
करिओन कतेक मांगा चाहा
ना हय सेंसे हार बाहा।

कतेक रकम बाहरालेइ त पाइयो।
पूस मासे पिटियो धान
तखन रीझेक नाइ ठेकान।

माच मास फेइर हार बाहाइ पाइयो।
सृष्टिइं कहेइ कलेक काम।

काम करलेइ पाइयो दाम।
हिसकाइं, इरसाइं धन ना हाराइओ।

जापानी ढंगेक चास

चास करा जापानी ढंगे,
सरकारे मदत करतोऊ नाना रंगे।

पाँता–पाँता रोपिस धान,
आरो सारू पेयाज मान
धनिया किछु देसिक आलुक संगे।

माघ मासे देसिक डिंगला
चइते लागावइस कारला
बरसाख मासे साइर–गोबर चालाबे
आरो लागाविस खीरा।

हेरेइद गिला देसिक छाँहिरे
कपि चास करिस रिझे–रंगे।

आसाड़े कापास पान
तबे देसेक हेतेइक नाम
बूट, मसरी देसिक डंगे–डंगे।

हामर आहि सभे हक
सृष्टिधर ता कढ़िक ढक
धमकाइके खाताक जेनिक संगे।

गुंजा आर कुरथी

चास करा सभेकाइ गुंजा आर कुरथी,
बेजाईं जाएगा आहेइक पड़ती।

जेटा तीन बछरेक खिल,
सेई गड़ाटाईं देसिक तिल।

आलू , मूला लागे भाइ सुसती,
चास करा सभेकाइ गूंजा आर कुरथी।

मने करि अनुराग,
देहाक किछु पालक–साग।

घार बाड़ीटाइ लागाइ बेइगन बिलाती,
चास करा सभेकाइ गुंजा आर कुरथी।

आर एकटा करिस काज,
देसिक किछु मरिच गाछ।

सेइ ठिने करे हेताेऊ बस्ती,
चास करा भाइ गुंजा आर कुरथी।

छिन हेल परे बेइरसा,
गाँव घारे देसिक सेइरसा।

सृष्टिधरेक तिल बिहिनेक घटती,
चास करा भाइ गुंजा आर कुरथी।

काकरो काथाई भूलिहा ना

करा सभेकाइ पेआज दाना,
काकरो काथाइ भूलिहाना।

बाड़िक भीतर बसी तबे बेचबे।

बेसी देसिक गोबर गुला,
ताहां लागाविस मूला।

सेटा ना हेले चालानी साइर किनबे।

एक टाकाइं चाउर सेर,
बिघा माटिक फार फेर।

चालेइने चालल रकम चालिके।

जातोउ तर सब धांधा,
पहा राखें सकरकांदा।

सिझाई पड़ाइ मोहन भोग खाल खाबे।

जदि रहेक बड़ऽ टपी,
तबे लगाविस बांधा कपी।

दुइ तीन दिन भीतरे ढांपि देबे।

जातेइक देसेक दुरदसा,
जदि सबेकाइ बुनत सेइरसा।

सृष्टिधरे कहे डिंगला,
मूला पूस मासे लगाउबे,
बाड़िक भीतरे बसी तबे बेचबे।

चास

चास करा सभेकाइ,
गुंजा आर कुरथी।

बेजाइं जाइगा आहेइक पड़ती।

जेटा तीन बछरेक खिल,
से गड़ाटाइं देसिक तिल।

आलू , मूला लागे भाइ सुसती
चास करा सभेकाइ,
गुंजा आर कुरथी।

मने करि अनुराग,
देहाक किछु पालक साग
घार बाड़ीइं लागाइ बेइगन बिलाती।

चास करा सभेकाइ,
गुंजा आर कुरथी।

आर एकटा करिस काज,
देसिक किछु मरिच गाछ

सेइठीन करे हेतोऊ बसती,
छीन हेले परे बेइरसा,

गाँव धारे देसिक सेइरसा
सृष्टिधरेक तिल बिहिनेक घटती।

चास करा सभेकाइ,
गुंजा आर कुरथी।

चासा

चास ना छाड़िस भाइ,
जतेक दिन बांचबे,
दु:ख भीतरे सुखे रहबे।

करा सबाइ पिंआज दाना,
काकरऽ काथाइ भुलिहाना,
धारेक भीतरे बसि बेचबे।

बेसी देसिक गोबर गुला,
ताहां लगाविस मूला,
से ना हेले चालानी साइर किनबे।

जदि रहेइक बड़ऽ ढिपी,
ताहा लागाविस बांधा कोपी,
दुइ तीन दिन उपरे ढांपा देबे।
दु:ख भीतरे सुखे रहबे।

51. चास महिमा

सुना जतेक चासागन
चासे–बासे देहाक मन।

देश हेकी कृषि प्रधान
जय जवान, जय किसान।

संगी करा शिव वाहन
हार जता मनेक मतन।

लहल हाइ करा बिहिनधान
जय जवान, जय किसान।

—:o:—



संत कवि सृष्टिधर सिंह देव कटियार

जन्म - 1898 ई0

निधन - जून 1977 ई0

मुद्रक 5 नॉवल्टी आर्ट प्रेस, मेन रोड, राँची-834001, दूरभाष 2331631